96

अलविदा–और स्वागत!

बाइबल पाठ #44

VIII. यीशु का पुनरुत्थान, दर्शन, और स्वर्गारोहण (क्रमश:)।
  ख. चालीस दिन (देखें प्रेरितों 1:3) (क्रमश:)।
    3. आठवीं बार दिखाई देना: गलील में एक पहाड़ पर प्रेरितों को (और पांच सौ चेलों को) (मत्ती 28:16, 17; 1 कुरिन्थियों 15:6)।
    4. पहाड़ पर ग्रेट कमीशन (मत्ती 28:18–20; मरकुस 16:15–18; देखें लूका 24:46–48)।
    5. नौवीं बार दिखाई देना: याकूब को (एक अज्ञात स्थान पर) (1 करिन्थियों 15:7क)।
    6. अन्तिम बार दिखाई देना: यरूशलेम के निकट, यहूदिया में सब प्रेरितों को (लूका 24:44–49; प्रेरितों 1:3–8; 1 कुरिन्थियों 15:7ख)।
    7. जैतून के पहाड़ से स्वर्ग पर उठाए जाना (मरकुस 16:19; लूका 24:50–53; प्रेरितों 1:9–12)।
  ग. संक्षिप्त कथन:
    1. मसीह के जीवन पर संक्षिप्त कथन (यूहन्ना 20:30, 31; 21:25; देखें प्रेरितों 20:35)।
    2. उसके बाद की घटनाओं पर संक्षिप्त कथन (मरकुस 16:20; देखें लूका 24:52, 53; प्रेरितों 1:12)।

परिचय

कई वर्ष पूर्व साहित्य से जुड़े लोग लंदन में इकट्ठे हुए।[1] किसी ने सवाल किया: ''आपको क्या लगता है कि अगर मिल्टन[2] इस कमरे में आ जाए तो हम क्या करेंगे?'' जवाब मिला, ''हम उसका स्वागत धूमधाम से करेंगे!'' किसी और ने पूछा, ''अगर शेक्सपीयर[3] आ जाए तो हम क्या करेंगे?'' किसी ने उत्तर दिया, ''हम उठकर उसे गीत सम्राट का मुकुट पहना देंगे।'' फिर किसी ने सवाल किया, ''अगर यीशु मसीह इस कमरे में आ जाए तो?'' काफ़ी देर तक खामोशी छाई रही, जो लेखक चार्ल्स लैम्ब की बात से टूटी:[4] ''मेरे विचार से हम सब उसके सामने मुंह के बल गिर जाएंगे!''

पृथ्वी पर मसीह की सेवकाई पर अपने अध्ययन की समाप्ति पर आकर, मुझे उम्मीद है कि आपको यीशु के और निकट लाया गया है और यीशु को आपके निकट लाया गया है।

यदि यह सही है, तो मेरी प्रार्थना है कि आप घुटने टेककर या समर्पण, श्रद्धा और आज्ञाकारिता में ''उसके सामने मुंह के बल गिर गए'' हैं।

पिछली प्रस्तुति में, हमने यीशु के पुनरुत्थान तथा स्वर्गारोहण के बीच के चालीस दिनों का अध्ययन आरम्भ किया था (देखें प्रेरितों 1:3)। सुसमाचार के वृत्तांतों में चालीस दिनों की घटनाओं को संक्षिप्त किया गया है, कई बार तो ऐसा लगता है, जैसे वे घटनाएं कई सप्ताह के अंतराल में नहीं बल्कि एक ही दिन में घटी हों।[5] इसलिए हम इन अंतिम दृश्यों के सही-सही क्रम के सम्बन्ध में हठधर्मी नहीं हो सकते। मेरी अंतिम प्रस्तुतियों की शृंखला एक तरह से घटनाओं को क्रमबद्ध करना है।

मैं यह ज़ोर देने के लिए कि प्रेरितों को छोड़ते हुए यीशु केवल ''अलविदा'' ही नहीं कह रहा था, बल्कि वह उन्हें फिर से ''स्वागत'' कहने के लिए तैयारी भी कर रहा था,[6] इस अध्ययन को ''अलविदा-और स्वागत!'' नाम दे रहा हूं।[7] पिन्तेकुस्त के दिन के बाद वह पृथ्वी पर उनके साथ रहने के समय से अधिक सामर्थी ढंग से ''[उनके] संग'' था (मत्ती 28:20)। इस शीर्षक का इस्तेमाल मैं हर पाठक को यह प्रोत्साहन देने के लिए करना चाहता हूं कि वे इस अध्ययन को यीशु के बारे में अध्ययन का पूरा होना न समझ बैठे, बल्कि मेरा प्रयास है कि इससे आपको प्रभु को जानने के लिए जीवन भर के समर्पण के लिए सामग्री मिल जाए। प्रभु करे कि शृंखला का यह अंतिम भाग उसे ''अलविदा'' नहीं, बल्कि ''स्वागत'' कहना हो!

चुनौतीपूर्ण आज्ञा (मत्ती 28:16-20; मरकुस 16:15-18; 1 कुरिन्थियों 15:6; देखें लूका 24:46-48; प्रेरितों 1:8)

आठवां दर्शन

अपनी मृत्यु से पहले के अन्तिम संदेश में, यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था, ''... मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा'' (मत्ती 26:32)। यीशु के जी उठने के बाद, स्वर्गदूतों ने स्त्रियों को बताया था, ''शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है ...'' (मत्ती 28:7)। थोड़ी देर बाद, यीशु ने स्वयं उन स्त्रियों को बताया, ''मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि गलील को चले जाएं, वहां मुझे देखेंगे'' (मत्ती 28:10)। मत्ती के अनुसार ''ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जो यीशु ने उन्हें बताया था'' (मत्ती 28:16)।[8]

अपने पुनरुत्थान से पहले या बाद में यीशु ने किसी समय यह विशेष मिलने की जगह निश्चित की थी। हमें यह नहीं बताया गया है कि पहाड़ कौन सा था। यह उसकी सेवकाई से जुड़े पहले किसी एक में से हो सकता है: उदाहरण के लिए रूपान्तर का पर्वत या वह तराई जहां से उसने पहाड़ी उपदेश दिया था। यीशु ने गलील को ही क्यों चुना? शायद वह अपने चेलों और उनके शत्रुओं में थोड़ी दूरी बनाए रखना चाहता था। शायद उसके अधिकतर

चेले इस समय गलील में थे।[9] शायद गलील में यह एक निर्जन स्थान था, जहां यीशु अपने चेलों के साथ एकांत में मिल सकता था। हमें केवल यही बताया गया है कि यीशु ने अपने चेलों को गलील में एक पहाड़ पर मिलने के लिए कहा–और वे मिले।

अधिकतर लेखकों का मानना है कि वहां केवल प्रेरित ही इकट्ठे नहीं हुए थे।[10] पौलुस ने पुनरुथान के बाद यीशु के दर्शनों की सूची बनाते हुए, प्रेरितों को दिए यीशु के (यहूदिया में) दर्शन की बात की, तो कहा कि ''फिर पांच सौ से अधिक भाइयों को एक साथ दिखाई दिया, जिन में से बहुतेरे अब तक वर्तमान में जीवित हैं,[11] पर कितने सो गए''[12] (1 कुरिन्थियों 15:6)। इतने बड़े समूह को यह दर्शन अवश्य ही गलील में ''उस पहाड़ पर, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था'' (मत्ती 28:16) हुआ होगा। यह सबसे महत्वपूर्ण दर्शन था: पांच सौ स्वतन्त्र साक्षी गवाही दे सकते थे कि उन्होंने क्रूसारोहण के बाद यीशु को जीवित देखा है।

जब चेले ठहराई हुई जगह पर गए, तो यीशु पहले से वहां था। मत्ती ने लिखा है, ''उन्होंने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी-किसी को संदेह हुआ'' (मत्ती 28:17)। मत्ती के वृत्तांत में ''किसी-किसी'' को संदेह होने की बात प्रेरितों के लिए कही गई हो सकती है, चाहे ग्यारहों ने यहूदिया में मान लिया था कि मसीह जीवित है। सुसमाचार के अन्य वृत्तांतों के साथ इस आयत को मिलाने के कई ढंग हैं। शायद जब प्रेरितों ने यीशु को पहली बार पहाड़ पर या पहाड़ के निकट देखा, तो वह कुछ दूरी पर था[13] और उन्हें विश्वास नहीं हुआ था कि यह वही है या कोई और। क्योंकि (दूसरे लेखकों की तरह) मत्ती ने पुनरुत्थान के बाद की घटनाओं को संक्षिप्त किया है, इसलिए उसकी बात का अर्थ प्रेरितों का *पहले* वाला अविश्वास हो सकता है। परन्तु कुछ लेखकों का विचार है कि संदेह प्रेरितों को नहीं, बल्कि पांच सौ में से केवल कुछ लोगों को हुआ था, जो जी उठने के बाद यीशु को पहली बार देख रहे थे। ये लोग भी वैसे ही संदेह करने वाले होंगे जैसे पहले प्रेरितों ने किया था और प्रभु के सचमुच में जी उठने का वैसा ही प्रमाण चाहते होंगे।

ग्रेट कमीशन

इतने अधिक श्रोताओं में, हम मसीह से उम्मीद करते हैं कि वह उनके साथ काफ़ी बातचीत करे। उसने ''परमेश्वर के राज्य की'' बहुत सी बातें की भी (प्रेरितों 1:3), परन्तु उन्हें इकट्ठे करने का उसका मुख्य उद्देश्य वह आज्ञा देना था, जिसे हम ग्रेट कमीशन कहते हैं:[14]

> ... स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं (मत्ती 28:18-20)।

इस आज्ञा के मत्ती के वृत्तांत में सम्भवतया इसी अवसर की बात की गई है:[15]

> ... तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुमाचार का प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा,[16] परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:15, 16)।

बाद में लूका ने सुसमाचार के अपने वृत्तांत के अन्त में और प्रेरितों के काम की पुस्तक के आरम्भ में इस कमीशन या आज्ञा की बात की। सम्पूर्णता के लिए, आइए हम उन पदों को यहां देखते हैं:

> ... यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो (लूका 24:46-48)।
>
> ... तुम ... यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे (प्रेरितों 1:8)।

ये अलग-अलग वृत्तांत आपस में विरोधाभास नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं। इन्हें मिलाने पर, ग्रेट कमीशन के आवश्यक पहलुओं को देखा जा सकता है। मत्ती द्वारा दिए गए ''सारा''[17] को तीनों लेखकों द्वारा दिए गए विवरणों को संगठित करने के लिए एक रूपरेखा के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है:

(1) *''सारा अधिकार।''* नये नियम में, यूनानी शब्द (*exousia*) का अनुवाद ''अधिकार'' ''मुख्यतया ... उस कार्य की सम्पूर्ण सम्भावना का संकेत देता है, जो सम्पूर्ण सामर्थ और वैधता देने वाले के रूप में केवल परमेश्वर के लिए ही उपयुक्त है।''[18] वह सम्पूर्ण अधिकार-स्वर्ग और पृथ्वी दोनों में-पिता द्वारा पुत्र को दिया गया था (मत्ती 28:18)। इस कारण यीशु को अपनी आज्ञा आगे देने का हर अधिकार था। जो लोग उसके अधिकार को मानने में असफल रहते हैं, एक दिन उन्हें उसके क्रोध को झेलना पड़ेगा।

(2) *''सब जातियां।''* क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले, यीशु और उसके चेलों ने अपनी शिक्षा मुख्यतया यहूदियों तक ही सीमित रखी थी (देखें मत्ती 10:5; 15:24)। अब वह पाबंदी उठा ली गई थी, क्योंकि प्रेरितों ने ''सब जातियों'' के पास (मत्ती 28:19; लूका 24:47), ''सारे जगत में'' और ''सारी सृष्टि के लोगों'' के पास (मरकुस 16:15), ''और पृथ्वी की छोर तक'' (प्रेरितों 1:8) जाना था।

न केवल उनके सुनने वाले बदल जाने थे, बल्कि सुनाया जाने वाला संदेश भी बदल जाना था। पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई के समय यीशु और उसके चेलों के प्रचार का केन्द्र

''राज्य निकट आया है'' ही था (देखें मत्ती 4:17; 10:7; लूका 10:9)। प्रेरितों को लोगों में यह बताने की मनाही थी कि यीशु ही मसीह है (मत्ती 16:20)। उस समय से उन्होंने ''*सुसमाचार* प्रचार'' करना था (मरकुस 16:15)। उन्होंने यह *शुभ संदेश* देना था कि राजा मसीहा आ चुका है तथा उसने कष्ट सहा था और तीसरे दिन मृतकों में से जी उठा है (लूका 24:46), ताकि आत्माओं का उद्धार हो सके (देखें 1 कुरिन्थियों 15:3, 4; मरकुस 16:16)।

यीशु के आदेश में सुसमाचार को सुनने वालों के लिए आवश्यक आरम्भिक प्रत्युत्तर भी बता दिया गया है। ग्रेट कमीशन की आज्ञा माने जाने के लिए कई बातें होनी आवश्यक हैं:

- लोगों को यीशु के बारे में सिखाया जाना आवश्यक है (मत्ती 28:19; मरकुस 16:15)। ''चेले'' (मत्ती 28:19क) या शिष्य बनाना आवश्यक है।[19]
- उन्हें विश्वास करना आवश्यक है (मरकुस 16:16): उनके लिए विश्वास करना आवश्यक है कि यह संदेश सत्य है और उसके बलिदान में भरोसा करना, जो उनके लिए मरा है।[20]
- उन्हें मन फिराना आवश्यक है (लूका 24:47): उन्हें अपने पापों से मन फिराना, अपने जीवनों को बदलना और प्रभु के लिए जीने का निश्चय करना आवश्यक है।
- उन्हें बपतिस्मा लेना आवश्यक है (मत्ती 28:19ख; मरकुस 16:16)। यह बपतिस्मा उद्धार पाने के लिए (मरकुस 16:16) ''पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा[21] के नाम से''[22] पानी में डुबकी लगाना[23] है (मत्ती 28:19ख)।
- जब लोग आज्ञाकारिता से उसकी बात मान लेते हैं, तो परमेश्वर उन्हें बचा लेता है, अर्थात उनका उद्धार करता है। उनके पिछले पाप क्षमा कर दिए जाते हैं (लूका 24:47)।

(3) *''सब बातें, जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है।''* अभी-अभी जिस जवाब की बात की गई है, वह अन्त नहीं, बल्कि आरम्भ ही है। बपतिस्मा लेने के बाद अतिरिक्त शिक्षा की आवश्यकता होती है। यीशु ने यह ज़ोर दिया कि बपतिस्मा लेने वालों को वे *सभी* बातें सिखाई जानी आवश्यक हैं, जिनकी यीशु ने अपने चेलों को आज्ञा दी थी।

संदर्भ में, इसमें ''जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाना और बपतिस्मा देना'' की चुनौती शामिल है, क्योंकि उसने यही आज्ञा उन्हें दी थी। इस प्रकार ग्रेट कमीशन ''अपने आप को बनाए रखना'' है।[24] वाल्टर विंग ने कहा है, ''यीशु की हत्या करना ... डैंडेलियन फूल के बीज को इस पर फूंक मारकर नाश करने की तरह है।''[25]

बेशक, उस सब को जो यीशु ने कहा है, सिखाने की आज्ञा में बहुत कुछ शामिल है। कुछ लोग, सुसमाचार को फैलाने की अपनी उत्सुकता में, किसी को बपतिस्मा देने के बाद, नये मसीही को विश्वास में दृढ़ किए बिना अगले व्यक्ति को सिखाने के लिए निकल पड़ते

हैं। हमारी ज़िम्मेदारी केवल पापी को विश्वास और बपतिस्मे तक लाने की ही नहीं है! हमें ‘‘हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ने’’ में उसकी सहायता करना भी आवश्यक है (2 पतरस 3:18क)।

(4) *‘‘मैं सदा तुम्हारे संग हूं।’’*यीशु के जन्म से पहले, यह भविष्यवाणी की गई थी कि उसका नाम ‘‘इम्मानुएल’’ होगा, जिसका अर्थ है ‘‘परमेश्वर हमारे साथ’’ (मत्ती 1:23)। यह भविष्यवाणी तब पूरी हुई, जब परमेश्वर का पुत्र मनुष्यों में चला फिरा और यीशु अपने चेलों को बताना चाहता था कि वह आत्मिक रूप में उनके साथ बना रहेगा। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने कहा है, ‘‘यह प्रतिज्ञा केवल संगति की ही नहीं, बल्कि पूरी सहानुभूति और समर्थन की है। ...’’[26]

प्रतिज्ञा के समय से हमें पता चलता है कि यह प्रतिज्ञा और सामान्य अर्थ में आज्ञा केवल प्रेरितों के लिए ही नहीं थी। प्रभु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसकी आज्ञा ‘‘जगत के अन्त तक’’[27] (मत्ती 28:20) अर्थात उसके द्वितीय आगमन तक रहेगी। डी. डब्ल्यू. फोर्ड ने लिखा है, ‘‘हमारे लिए महत्वपूर्ण सबक है कि जी उठा मसीह आत्मिक रूप में हमारे साथ उतना ही है, जितना शारीरिक रूप में गलील और यहूदिया में चेलों के साथ था।’’[28] कितना उत्तेजना और सांत्वना भरा विचार है यह!

मरकुस के वृत्तांत में कहा गया है कि यीशु ने प्रेरितों को एक विशेष प्रतिज्ञा भी दी।[29] उनके अविश्वास के लिए उन्हें डांटने के बाद (मरकुस 16:14), उसने उस सामर्थ के विषय में बताया, जो उन्हें मिलनी थी यदि वे अपने संदेह पर नियन्त्रण पा लेते:

> विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई-नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौ भी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे (मरकुस 16:17, 18)।

प्रेरितों के काम पुस्तक में प्रेरितों के साथ होने वाले इन अधिकतर ‘‘चिह्नों’’ के उदाहरण दिए गए हैं।[30]

मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16 और लूका 24:46-48 का गहराई से अध्ययन करें। लगभग दो हज़ार वर्ष से विश्वव्यापी सुसमाचार प्रचार के लिए इन्हीं शब्दों का इस्तेमाल किया जाता है। इनमें आज की कलीसिया के लिए आगे बढ़ने के आदेश वही हैं, जो उन्नीस शताब्दियां पहले प्रेरितों के लिए थे!

ग्रेट कमीशन						
	सुसमाचार सुनाना / सिखाना	विश्वास करो	मन फिराओ	बपतिस्मा लिया	उद्धार / पापों से उद्धार	पर आगे
मत्ती	✓			✓		✓
मरकुस	✓	✓		✓	✓	
लूका	✓		✓		✓	

काफ़ी उलझन
(लूका 24:44-49; प्रेरितों 1:3-8; 1 कुरिन्थियों 15:7)

नौवां दर्शन

पांच सौ को दिए गए दर्शन की बात करने के बाद, पौलुस ने मसीह के दर्शनों की सूची बताते हुए लिखा, ''फिर याकूब को दिखाई दिया'' (1 कुरिन्थियों 15:7क)। यह याकूब सम्भवतया यीशु का सौतेला भाई ही था, जो अन्त में यरूशलेम की कलीसिया का एक सम्मानित अगुआ बन गया था (प्रेरितों 12:17; 15:13; 21:18; गलातियों 1:19; 2:9)।

हम नहीं जानते कि यीशु अपने सौतेले भाई को कब और कहां दिखाई दिया, परन्तु यह अवश्य ही एक यादगारी भेंट रही होगी। कोई संदेह नहीं कि यीशु ने इस विशेष दर्शन का याकूब को यह विश्वास दिलाने के लिए इस्तेमाल किया कि वह ही मसीहा है। उसके भाइयों ने उसमें विश्वास नहीं किया था (यूहन्ना 7:5)। शायद प्रभु ने याकूब को विशेष रूप से इसलिए दर्शन दिया, क्योंकि उसे मालूम था कि उसके सम्बन्धियों में सबसे बड़ा

होने के कारण[31] याक़ूब दूसरों को समझा सकता है। जो भी हो, यीशु के भाई उसके पुनरुत्थान के बाद उसमें विश्वास ले आए *थे* और पवित्र आत्मा के आने की प्रतीक्षा कर रहे प्रेरितों के साथ थे (प्रेरितों 1:12-14)। उन्हीं में से दो ने अर्थात याक़ूब (याक़ूब 1:1) और यहूदा (यहूदा 1) नामक पत्रियां लिखीं।[32]

अंतिम दर्शन[33]

चालीस दिनों का अन्त निकट आने पर, यीशु यरूशलेम के क्षेत्र में यहूदिया में वापस चला गया (देखें लूका 24:50, 52; प्रेरितों 1:4, 12)। उसका उद्देश्य यरूशलेम में स्थापित होने वाली कलीसिया और उस क्षेत्र में पहली बार सुनाए जाने वाले सुसमाचार के लिए अंतिम तैयारी करना था (देखें प्रेरितों 1:8)। यीशु ने कहा था कि पुराने नियम के पवित्र शास्त्र में यह लिखा हुआ है कि ''*यरूशलेम से लेकर* सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा'' (लूका 24:47)। यशायाह ने भविष्यवाणी की थी कि ''परमेश्वर का भवन'' (''कलीसिया''; 1 तीमुथियुस 3:15) बनने पर ''सब जातियों'' ने इसकी ओर खिंचना था, और ''परमेश्वर का वचन *यरूशलेम से* [निकलना था]'' (यशायाह 2:2, 3)।

स्वर्ग पर उठाए जाने से थोड़ी देर पहले, यीशु ने ''सब प्रेरितों'' (1 कुरिन्थियों 15:7ख) को अंतिम दर्शन दिया था। उसने उन से ''परमेश्वर के राज्य की बातें'' कीं (प्रेरितों 1:3) और कहा, ''ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं,[34] कि आवश्यक है, कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं और भजनों की पुस्तकों में, मेरे विषय में लिखी गई हैं, सब पूरी हों'' (लूका 24:44)।[35] यहूदी लोग अपने धर्मशास्त्र को तीन भागों में बांटते थे: मूसा की व्यवस्था, भविष्यवक्ता और लेख। ''लेख'' अधिकतर भजनों की पुस्तक से बनते थे, जिस कारण ''भजनों'' शब्द का इस्तेमाल कई बार तीसरे विभाजन के लिए किया जाता था। इसलिए मसीह यहां यह ज़ोर देर रहा था कि उसके सम्बन्ध में पूरी शिक्षाएं पुराने नियम में ही थीं।

फिर यीशु ने ''पवित्र शास्त्र बूझने के लिए [प्रेरितों] की समझ खोल दी'' (लूका 24:45)। यह उसने आश्चर्यकर्म से किया हो सकता है, परन्तु अगली आयतों से यह सुझाव मिलता है कि ऐसा उसने और समझाकर किया। ''उनकी समझ खोल'' देने का काम उसने वैसे ही किया हो सकता है जैसे उसने ''सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें'' समझाया था (लूका 24:27)। अपने प्रेरितों को उसने बताया:

> यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा। और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव[36] का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा। तुम इन सब बातों के गवाह हो। और देखो, जिस की प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उस को तुम पर उतारूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो (लूका 24:46-49)।

पिता की ''प्रतिज्ञा'' और ''स्वर्ग से सामर्थ'' पवित्र आत्मा के लिए कहा गया था, जिसे यीशु ने दस दिन बाद प्रेरितों पर भेजना था। उसने उन्हें ''यरूशलेम को न छोड़ने'' के लिए कहा। उन्होंने ''पिता की प्रतिज्ञा की प्रतीक्षा'' करनी थी–''जिसकी'' उसने कहा कि ''चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो;[37] क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 1:4, 5)।

समझना कठिन

जैसा कि पहले कहा गया था, प्रेरितों के साथ अपने अंतिम क्षणों के दौरान, यीशु उनसे ''परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा'' (प्रेरितों 1:3)। उनके प्रत्युत्तर से यह पता चला कि वे राज्य की वास्तविक प्रवृत्ति को समझ नहीं पा रहे थे: ''हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल का राज्य फेर देगा?'' (प्रेरितों 1:6)। कुछ लेखकों का मत है कि प्रेरित यीशु से केवल यही जानना चाहते थे कि वह अपना आत्मिक राज्य *कब* स्थापित करेगा। परन्तु ''इस्राएल का राज्य फेर'' देने के शब्दों से यह संकेत मिलता है कि उनका ध्यान सांसारिक राज्य की ओर ही था। द लिविंग बाइबल के वाक्यांश में ''हे प्रभु, क्या तू इस्राएल को [रोम से] स्वतन्त्र कर एक स्वतन्त्र देश के रूप में बहाल कर रहा है?'' कम से कम यहां तक तो प्रेरितों को समझ नहीं आया था।

एक अर्थ में, यीशु ने उन्हें बताया कि यह चिंता न करें कि प्रभु राज्य को कब स्थापित करेगा (प्रेरितों 1:7)। इससे पहले उसने कहा था कि राज्य ''सामर्थ सहित'' (मरकुस 9:1) आएगा। अब, उसने उन्हें बताया कि जब पवित्र आत्मा उन पर उतरेगा तो वे ''सामर्थ पाएंगे'' (प्रेरितों 1:8क)। यह होने पर आत्मा ने उनकी उलझन खत्म कर देनी थी और उन पर सब कुछ स्पष्ट कर देना था (देखें यूहन्ना 14:26; 16:13)।

बना रहने वाला ढाढ़स (मरकुस 16:19, 20; लूका 24:50-53; यूहन्ना 20:30; 21:25; प्रेरितों 1:9-12)

स्वर्गारोहण

यीशु द्वारा अंतिम शब्द जैतून के पहाड़ के निकट या इस पर कहे गए थे (प्रेरितों 1:12)। ''यह कहकर'' (प्रेरितों 1:9क),[38] वह प्रेरितों को ''बैतनिय्याह तक बाहर ले गया'' (लूका 24:50क)। यह बैतनिय्याह के दृश्य में, जो उद्धारकर्त्ता के लिए कई यादगारों वाला नगर था, पहाड़ की दक्षिण-पूर्वी ढलान पर कोई प्रसिद्ध स्थान होगा। फिर उसने ''अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी'' (लूका 24:50ख)। यह महत्वपूर्ण है कि उसका अंतिम कार्य आशीष देना था।

उसके स्वर्गारोहण का कुछ ही शब्दों में वर्णन किया गया है:[39] ''और उन्हें आशीष देते हुए वह उन से अलग हो गया'' (लूका 24:51क)। ''वह उन के देखते-देखते ऊपर उठा लिया गया; और बादल ने उसे उन की आंखों से छिपा लिया'' (प्रेरितों 1:9ख)। उसे

''स्वर्ग पर उठा लिया गया'' (लूका 24:51ख), जहां वह ''परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया'' (मरकुस 16:19)। वहां से वह अपने राज्य/कलीसिया पर राज करने लगा। पौलुस ने लिखा है कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जिलाने के बाद उसे ...

> ... स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर। सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर जाने वाले लोक में भी लिया जाएगा, और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है (इफिसियों 1:20-23)।

आश्वासन

अपने प्रिय प्रभु को बादलों में अलोप होता देखने की प्रेरितों की भावनाओं की कल्पना ही की जा सकती है। लूका कहता है कि ''वे आकाश की ओर ताक रहे थे'' (प्रेरितों 1:10क)। द लिविंग बाइबल के वाक्यांश में कहा गया है कि ''वे एक और झलक पाने के लिए नज़रें टिकाए हुए थे।''

फिर उन्हें पता चला कि ''दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए'' थे (प्रेरितों 1:10ख)। वे ''दो पुरुष'' स्वर्गदूत थे, और उन्होंने प्रेरितों से कहा, ''हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े स्वर्ग की ओर देख रहे हो ? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुमने उसे स्वर्ग को जाते देखा है, उसी रीति से वह फिर आएगा'' (प्रेरितों 1:11; देखें प्रकाशितवाक्य 1:7)। उनकी बातों से प्रभु की प्रतिज्ञा की पुन: पुष्टि हो गई कि वह फिर आने वाला है (यूहन्ना 14:3)। यह तथ्य कि मसीह एक दिन अपने लोगों को लेने और दुष्ट लोगों को दण्ड देने के लिए आएगा, आरम्भिक मसीहियों के लिए बड़ा सांत्वना देने वाला था (1 थिस्सलुनीकियों 4:16-18; प्रकाशितवाक्य 22:20)।

प्रेरितों ने यीशु को दण्डवत किया, फिर ''बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए और लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे'' (लूका 24:52, 53; देखें प्रेरितों 1:12) और वे आत्मा के आने और राज्य/कलीसिया की स्थापना की प्रतीक्षा करते थे। मरकुस, जिसने प्रेरितों के काम की घटनाओं के *बाद* अपना वृत्तांत लिखा है,[40] ने प्रेरितों को ग्रेट कमीशन, दूसरों तक ले जाते और प्रभु की प्रतिज्ञाओं को पूरा होते देखा। उसने अपनी पुस्तक का समापन इन शब्दों के साथ किया, ''और उन्होंने [अर्थात प्रेरितों ने] निकलकर हर जगह प्रचार किया और प्रभु उन के साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को,[41] दृढ़ करता रहा। आमीन'' (मरकुस 16:20)।[42] ''शेष कहानी'' के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक पढ़ें।

सारांश

मरकुस के संक्षिप्त कथन के साथ हम मसीह के जीवन के अपने अध्ययन अर्थात पृथ्वी के उसके जीवन के अन्त में आ जाते हैं। हम प्रभु का धन्यवाद करते हैं कि वह आज

भी स्वर्ग में रहता है और हमारे लिए विनतियां करता है (इब्रानियों 7:25)। पृथ्वी पर उसकी सेवकाई की कहानी को जोड़ने के लिए मुझे छह से अधिक पुस्तकों का सहारा लेना पड़ा, इसके बावजूद मैं ''आधा भी नहीं बता पाया हूं।''[43] यूहन्ना ने लिखा है:

> यीशु ने और भी बहुत चिह्न चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:30, 31)।
>
> और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक-एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूं, कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे जगत में भी न समातीं (यूहन्ना 21:25)।

मसीह ने इतना कुछ किया-वह भी तीन या इससे अधिक वर्षों में! मृत्यु के समय वह तैंतीस वर्ष के लगभग था,[44] परन्तु मनुष्य जाति पर उसका प्रभाव कितना ज़बर्दस्त है! द *नैरेटेड बाइबल इन क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर* में, एफ़. लेगर्ड स्मिथ ने सुसमाचार के वृत्तांतों पर अपने भाग को यह कहते हुए समाप्त किया है:

> यीशु के जीवन के इन चार संक्षिप्त वृत्तांतों के साथ ही उसकी कहानी हर पीढ़ी के लिए सदियों से सम्भाली गई है, जो पृथ्वी पर हर भाषा के लोगों में आगे सौंपी जाती है, और असंख्य लोगों द्वारा उस पर विश्वास किया जाता है, जिन्होंने उसके पुत्र यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर में आज्ञाकारी विश्वास किया है।[45]

हमारे परिवार के ऑस्ट्रेलिया चले जाने के समय मैं तैंतीस वर्ष का था और मुझे यह विचार करना याद है कि ''मृत्यु के समय यीशु मेरी उम्र का था और देखो उसने वह सब पूरा कर दिया। *मैंने* क्या किया है?'' मुझे और आप को इस तथ्य के साथ अपने आप को मिलाना है कि हम यीशु के जीवन की नकल नहीं कर सकते-पर उसकी नकल या उसका अनुसरण करने की कोशिश *कर सकते* हैं। मेरी प्रार्थना है कि अध्ययनों की हमारी शृंखला से आपको ऐसा ही करने का प्रोत्साहन मिले। जैसा कि पहले कहा गया था कि मेरी यह भी आशा है कि इस शृंखला से आप को प्रभु के अध्ययन को जारी रखने तथा उसे और बेहतर ढंग से जानने के लिए सहायता मिले। इस अध्ययन की समाप्ति यीशु को ''अलविदा'' नहीं बल्कि ''स्वागत'' कहना होना चाहिए!

टिप्पणियां

[1] यह उदाहरण एलिस एम. नाइट, *1001 स्टोरीज़ फ़ॉर चिल्ड्रन एण्ड चिल्ड्रन'स वर्कर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1952), 148-49 से लिया गया था। [2] अंग्रेज़ कवि जॉन

मिल्टन (1608–74) पश्चिमी साहित्य की एक प्रमुख हस्ती था। [3]अंग्रेज़ नाटककार और कवि विलियम शेक्सपीयर (1564–1616) ने पश्चिमी सभ्यता के इतिहास में सबसे अधिक सराहनीय और प्रभावशाली साहित्य लिखा। [4]चार्ल्स लैम्ब (1775–1834) एक प्रसिद्ध अंग्रेज़ लेखक था। [5]उदाहरण के लिए, यदि हमारे पास मरकुस का ही वृत्तांत होता, तो हम सोचते कि इम्माउस के मार्ग पर जाने वालों को यीशु का दर्शन (मरकुस 16:12, 13), जिसके तुरन्त बाद प्रेरितों को दर्शन दिया गया (आयत 14), ग्रेट कमीशन दिए जाने के दिन ही हुआ (आयतें 15–17)। इसके अलावा हम सोचते कि उसी दिन इसके बाद प्रभु का स्वर्ग पर उठाया जाना हुआ (आयत 19)। परन्तु अन्य लेखों से हमें पता चलता है कि ये घटनाएं चालीस दिन के काल में घटीं। [6]हवाई में लोग एक शब्द का इस्तेमाल करते हैं–"अलोहा"–जिसका अर्थ "अलविदा" *और* "हैलो" दोनों हो सकता है। यदि आपके सुनने वाले "अलोहा" शब्द से परिचित हैं, तो आपको चाहिए कि यह समझाने के लिए कि एक ही समय में "अलविदा" और "स्वागत" कहने के लिए इसका इस्तेमाल करें। [7]आप "अलविदा" या गुडबाय और "हैलो" शब्दों से परिचित होंगे। पहले शब्द का इस्तेमाल तब किया जाता है, जब हम किसी से विदा लेते हैं और दूसरे शब्द का इस्तेमाल किसी से भेंट करने के समय। जहां आप रहते हैं, वहां इन शब्दों का इस्तेमाल इसी अर्थ में होता होगा; यदि आप चाहें तो अपने यहां इस्तेमाल होने वाले शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं। [8]पिछली प्रस्तुति में, हमने यीशु के प्रेरितों पर यहूदिया में दो बार प्रकट होने और फिर गलील की झील के पास कई बार चेलों को दिखाई देने का अध्ययन किया था। पहाड़ पर दिखाई देना स्पष्टतया ऐसा दर्शन था, जो पहले से तय किया गया था। [9]गलील में रहने वाले फसह के पर्व के बाद घर चले गए होंगे। [10]पहले से ठहराई गई इस सभा के मत्ती के वृत्तांत में केवल ग्यारह का उल्लेख है। परन्तु यूहन्ना 20:19–26 से यह प्रभाव मिलता है कि ऊपरी कमरे में यीशु के प्रकट होने के समय केवल ग्यारह ही थे और लूका 24:33 से हमें पता चलता है कि दूसरे लोग भी वहां थे।

[11]1 कुरिन्थियों लगभग 57 ईस्वी में लिखा गया था, जी उठने के लगभग बीस वर्ष से अधिक बाद, परन्तु कई लोग अभी भी जीवित थे जो यीशु के जी उठने के बाद उसे जीवन देखने की बात बता सकते थे। [12]इस आयत में, "सो गए" "मर गए" का कोमल शब्द है। [13]अगली आयत, मत्ती 28:18 कहती है कि "यीशु ने उनके *पास आकर* कहा।" इससे यह संकेत मिल सकता है कि उनके उसे पहली बार देखने के समय वह कुछ दूरी पर था। [14]इस आज्ञा के सम्बन्ध में संकेत दिए गए थे, जब यीशु यहूदिया में बन्द कमरे में प्रेरितों के साथ था। इस पुस्तक में पहले आए पाठ "आपको विश्वास दिलाने के लिए क्या करना पड़ेगा" में यूहन्ना 20:21–23 पर नोट्स देखें। [15]जैसा कि पहले कहा गया है, यदि केवल मरकुस का ही वृत्तांत लिया जाए, तो यह लगेगा कि यहूदिया में बन्द कमरे में यीशु का दिखाई देना, ग्रेट कमीशन और ऊपर उठाया जाना जल्दी–जल्दी एक के बाद एक होने वाली घटनाएं हैं। क्योंकि हम जानते हैं कि ऊपर उठाया जाना बन्द कमरे में यीशु के दिखाई देने के चालीस दिन के बाद हुआ, इसलिए यह सम्भव है कि ग्रेट कमीशन का मरकुस का वृत्तांत बन्द कमरे में दिए गए दर्शन के बाद आया। निश्चय ही यह सम्भव है कि यीशु ने मरकुस 16:15, 16 के शब्द मत्ती 28:18–20 के शब्दों से अलग समय में कहे होंगे; परन्तु शब्द इतने मिलते–जुलते हैं कि उनका अध्ययन इकट्ठे करना लाभदायक हो सकता है। [16]बपतिस्मे की आवश्यकता पर इस आयत की स्पष्ट शिक्षा कुछ लोगों को परेशान करती है। वे आपत्ति करते हैं कि "इसमें यह नहीं कहा गया कि 'जो बपतिस्मा न ले उस पर दण्ड की आज्ञा होगी।' " [17]एक "सब" "सदा" शब्द में भी मिलता है। [18]ज्योफरी डब्ल्यू. ब्रोमिले, सं. *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट,* सं. गर्हर्ड किट्टल एण्ड गर्हर्ड फ्रैडरिक अनु. ज्योफरी डब्ल्यू ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 239. [19]"चेला" शब्द पर चर्चा के लिए, "मसीह का जीवन, भाग 2" में पृष्ठ 25 पर "चेले बनने की बुलाहट" पाठ देखें। [20]यद्यपि ग्रेट कमीशन में विश्वास *के अंगीकार* की बात नहीं है, पर यह समझ आ जानी चाहिए।

[21]किसी को बपतिस्मा देते समय ये शब्द कहने का महत्व है (ताकि वहां उपस्थित सब लोगों को पता चल जाए कि क्या हो रहा है), परन्तु इन शब्दों का उद्देश्य हमें इस बात से प्रभावित करना है कि बपतिस्मा दिए जाने पर, हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ एक नये सम्बन्ध में प्रवेश करते हैं न कि यह बपतिस्मा देने के लिए कोई फारमूला है। संयोगवश परमेश्वरत्व में तीनों व्यक्तियों के सम्बन्ध में वचन में ये

सबसे स्पष्ट वाक्य हैं। [22]जिस समाज में मैं रहता हूं, वहां, ‘‘के नाम से’’ का अर्थ ‘‘के अधिकार से’’ हो सकता है। उदाहरण के लिए, जब कोई पुलिस अधिकारी कहता है ‘‘कानून के नाम से दरवाज़ा खोलो’’ तो उसके कहने का अर्थ होता है कि ‘‘कानून के अधिकार से।’’ मत्ती 28:19 में ‘‘के नाम से’’ का अर्थ ‘‘के अधिकार से’’ कहीं अधिक है, परन्तु इसी अवधारणा को शामिल किया जाएगा। [23]बपतिस्मे के पानी में डुबकी के सम्बन्ध में, ‘‘मसीह का जीवन, भाग 1’’ में पृष्ठ 125 पर ‘‘निकट आ गया’’ पाठ देखें। [24]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन 'स हारमनी ऑफ़ द फोर गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 357। [25]फिलिप यैंसी, *द जीज़स आई नैवर नियू* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1995, 226 में उद्धृत)। डैंडेलियन फूल यूरोप से लाया गया। इसके पीले फूल के साथ एक बीज होता है, जो सफेद, रूआंदार बॉल है। हवा (या फूंक मारने) से यह ‘‘गोला’’ रेशमी बालों के सैकड़ों बीजों में बिखर जाता है, जिसे हवा दूर-दूर तक ले जाती है। यदि आपके यहां डैंडेलियन फूल न हों, तो कोई और (सिम्बल जैसा) पौधा हो सकता है, जिसका बीज ऐसे ही उड़ जाता है। [26]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 764. [27]यूनानी शब्द का अनुवाद ‘‘जगत’’ (*aion* का एक रूप) ‘‘समय के एक काल’’ का संकेत देता है और इसके कई अर्थ हो सकते हैं। ग्रेट कमीशन के संदर्भ में, यह मसीही युग के लिए इस्तेमाल हुआ है। [28]डी. डब्ल्यू. क्लेवरले फोर्ड, *प्रीचिंग द रिज़न क्राइस्ट* (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1988), 83. [29]संदर्भ में, यीशु यह शब्द कहते समय ‘‘ग्यारह’’ के साथ बात कर रहा था (मरकुस 16:14) और इसी संदर्भ में, ग्यारह (प्रेरित) ही थे जो यह चिह्न दिखा सकते थे, (मरकुस 16:20)। कुछ लोगों ने मरकुस 16:17, 18 को हर विश्वासी के लिए लागू कर इसे बदनाम किया है (एक परिणाम सांपों को पकड़ने वाले गुट हैं)। मरकुस 16:17, 18 पर संक्षिप्त टिप्पणियों के लिए इससे अगला पाठ देखें। [30]कुछ उदाहरण ये हैं: दुष्टात्माओं को निकालने के सम्बन्ध में, देखें प्रेरितों 16:16-18; नई-नई भाषाओं (जो उन्होंने सीखी नहीं थीं) में बोलने के सम्बन्ध में, देखें प्रेरितों 2:1-8; सांपों को उठाने के सम्बन्ध में, देखें प्रेरितों 28:2-5; बीमारों को चंगा करने के सम्बन्ध में, देखें प्रेरितों 3:1-8. हमें किसी प्रेरित के विष पीने का कोई स्पष्ट उदाहरण नहीं मिलता है, परन्तु इतिहास से हम जानते हैं कि लोगों को विष देकर मारने की बात आम थी।

[31]यीशु के भाई-बहनों की सूची में सबसे पहले याकूब का नाम आता है (मत्ती 13:55; मरकुस 6:3), जिससे यह मान लिया जाता है कि वह मरियम की दूसरी संतान थी। [32]‘‘यहूदा’’ का छोटा रूप ‘‘ज्यूड’’ भी है (देखें मत्ती 13:55; मरकुस 6:3)। [33]अपने अध्ययन के लिए, मैं लूका 24:44-49 के शब्दों को प्रेरितों 1:3-8 में लूका के वृत्तांत से मिलाऊंगा। जी उठने के बाद के दर्शन 1 कुरिन्थियों 15:8 में शाऊल या पौलुस को दमिश्क के मार्ग पर दिए दर्शन के बाद खत्म हो गए। क्योंकि यह यीशु के ऊपर उठाए जाने के कई साल बाद हुआ, इसलिए चालीस दिन के दर्शनों की सूची में इसे नहीं मिलाया गया। [34]भूतकाल का इस्तेमाल दिलचस्प बात है, इसका अर्थ हो सकता है, ‘‘अपनी मृत्यु से पहले जब मैं तुम्हारे साथ था,’’ परन्तु यीशु ने सम्भवतया भूतकाल का इस्तेमाल इसलिए किया, क्योंकि उसकी विदाई का समय इतना निकट था। व्यावहारिक रूप में वह पहले ही जा चुका था। [35]सुसमाचार के वृत्तांतों के अन्य लेखकों की तरह, लूका ने यीशु के जीवन की अन्तिम घटनाओं को एक-दूसरे के साथ मिला दिया। इसलिए ऐसा लगेगा जैसे 24:44-49 का संदेश अपने जी उठने के दिन प्रेरितों को दिए उसके दर्शन के समय दिया गया। परन्तु ध्यान दें कि अगली आयत, आयत 50, ‘‘तब’’ से आरम्भ होती है, जो इस बात का संकेत हो सकता है कि यह बातचीत ऊपर उठाए जाने के बिल्कुल पहले हुई। हम ने इसे यहीं पर रखा है। [36]‘‘मन फिराव का इस्तेमाल यहां सब बातों को शामिल करने के अर्थ में किया गया है, जैसे विश्वास को कई बार जीवन के समस्त समर्पण को शामिल करके किया जाता है। ... यहां इस्तेमाल शब्द मन फिराव व्यक्ति के पूर्ण रूप से परमेश्वर की ओर मुड़ने के लिए है’’ (आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971], 1359)। [37]देखें यूहन्ना 14:17, 26; 15:26; 16:15. [38]देखें मरकुस 16:19क। [39]ऊपर उठाए जाने की सामान्य चर्चा के लिए, पुस्तक में आया पाठ ‘‘महिमा में ऊपर उठाया गया’’ देखें। [40]मरकुस द्वारा सुसमाचार के अपने वृत्तांत के लिखे जाने के समय के सम्बन्ध में, ‘‘मसीह का जीवन भाग, 1’’ में पृष्ठ 31 पर ‘‘मरकुस

की पुस्तक: मसीह, सेवक'' नामक पाठ देखें। लूका द्वारा प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिखे जाने के समय के बारे में, उसी पुस्तक में पृष्ठ 41 पर ''लूका की पुस्तक: मसीह, मनुष्य का पुत्र'' पाठ देखें।

[41]आश्चर्यकर्मों का एक उद्देश्य वचन को पक्का करना था (देखें इब्रानियों 2:3, 4)। एक बार पक्का हो जाने के बाद वचन को फिर से पक्का करने की आवश्यकता नहीं थी। इसलिए इस विशेष आवश्यकता के लिए आश्चर्यकर्म बन्द हो गए। [42]मरकुस 16:17, 18 में कुछ आश्चर्यकर्म के चिह्नों के सम्बन्ध में यीशु की प्रतिज्ञा मिलती है। मरकुस 16:20 कहता है कि यह प्रतिज्ञा पूरी हो गई थी। यह इस बात को ''साबित'' नहीं करता कि हमारे पास आज भी यही चिह्न होने चाहिए। [43]यह वाक्यांश सुलैमान राजा से भेंट करने आई शीबा की रानी के शब्दों के आधार पर है (देखें 1 राजा 10:7)। [44]''तीस *या अधिक वर्ष* '' और '' *लगभग* तैंतीस'' शब्दों के सम्बन्ध में, देखें लूका 3:23 और ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 174 पर ''मसीह की व्यक्तिगत सेवकाई कितनी देर की थी ?'' पाठ देखें। [45]एफ़. लेगर्ड स्मिथ, द *नैरेटेड बाइबल इन क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर* (यूजीन, ओरिगन: हार्वेस्ट हाउस पब्लिशर्स, 1984), 1484.

मरकुस की पुस्तक का विवादास्पद समापन[1]

शायद आप को पता हो या नहीं कि मरकुस 16 की समाप्ति के विषय में-विशेषकर 9 से 20 आयतों पर कुछ संदेह पाया जाता है। हिन्दी की बाइबल में KJV और NKJV की तरह (मैजोरिटी टैक्स्ट के आधार पर) इन आयतों को पवित्र शास्त्र में रहने दिया गया है। परन्तु अधिकतर आधुनिक अनुवादों (वैस्टकॉट-हौर्ट और सम्बन्धित बाइबल के आधार पर) में संकेत है कि इसमें एक समस्या है। उदाहरण के लिए, NASB तथा कई अन्य बाइबलों में मरकुस 16:9-20 को कोष्ठकों में रखा गया है। 9 से 20 आयतों के लिए टिप्पणी की गई है कि ''9-20 पद कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में नहीं मिलते हैं। ''

इस समस्या के सम्बन्ध में जो पहली बात मुझे कहनी चाहिए, वह शायद यह है कि इससे आपके प्रचार तथा सिखाने में कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ेगा। मरकुस 16:9-20 में मूल शिक्षा से अलग शिक्षा नहीं है, जो नये नियम में कहीं और न मिलती हो। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति के साथ बाइबल अध्ययन कर रहे हैं, जो मरकुस 16 के समापन के बारे में सवाल करता है, तो आप इस विषय पर सिखाने के लिए विवाद रहित दूसरी आयतों का इस्तेमाल ही करें।

इसके अलावा, व्यवहार में मरकुस 16:9-20 के सही होने पर किसी गंभीर बाइबल चर्चा में सवाल नहीं उठाया जाता। मुझे प्रचार करते पचास से अधिक साल हो गए हैं, और इस बीच मुझे नहीं याद कि कभी किसी ने इन पदों की प्रामाणिकता पर सवाल उठाया हो। इन पदों का इस्तेमाल विशेष तौर पर उस चर्चा में होना चाहिए, जो केवल विश्वास से उद्धार की शिक्षा देते हैं या जो यह सिखाते हैं कि आज भी आश्चर्यकर्म होते हैं। इन गुटों में से किसी ने भी मेरे पास आकर कभी नहीं कहा कि वे मरकुस 16:9-20 के परमेश्वर की प्रेरणा से होने को नहीं मानते।

तौ भी, आपकी सेवकाई में सवाल उठ *सकता है,* इसलिए कुछ टिप्पणियां देना सही होगा।[2] प्राचीन हस्तलिपियों, संस्करणों तथा प्रारम्भिक मसीहियों के लेखों के प्रमाणों की

विस्तृत चर्चा करने के लिए, आपको कहीं और ढूंढ़ना होगा, पर अभी के लिए नीचे दी गई टिप्पणियां ही काफ़ी होंगी। साधारण होने का जोखिम उठाकर, मैं मरकुस की पुस्तक के समापन पर अपनी चर्चा को चार सम्भावनाओं तक सीमित करूंगा।

सम्भावना #1: मरकुस ने परमेश्वर की प्रेरणा से अपना वृत्तांत आयत 8 के साथ समाप्त किया। इसकी सम्भावना बहुत कम लगती है। अपने आप को आरम्भिक पाठकों की जगह रखकर, अध्याय 16 पढ़ें और आयत 8 पर आकर रुक जाएं। क्या यह लेख अधूरा नहीं लगता। क्या ऐसा नहीं लगता कि इसमें *कुछ* कमी है? इस विषय से सम्बन्धित एक लेख में, थॉमस ब्रूमरशाइन ने लिखा है कि मरकुस ने सामान्यतया "भविष्यवाणी और पूरा होने की तकनीक" का इस्तेमाल किया है और सुझाव दिया है कि आयत 8 पर रुकना "[मरकुस की पुस्तक के] पाठक को निराश करके" छोड़ देगा।[3]

सम्भावना #2: मरकुस की पुस्तक का मूल समापन एक या अधिक आरम्भिक हस्तलेखों में से खो गया था,[4] और हमें कुछ पता नहीं है कि इसका समापन क्या होना चाहिए। अगले वाक्य का पहला भाग एक विलक्षण सम्भावना है। यह देखना कठिन नहीं है कि मरकुस के हस्तलेख का अन्तिम पृष्ठ स्क्रॉल (लपेटवीं पत्री) में हो या पुस्तक रूप में अचानक फट सकता था और खो सकता था। (मेरी लाइब्रेरी में कई किताबें हैं, जिनके पृष्ठ फटे हुए हैं।) यह सबसे तर्कसंगत व्याख्या है कि दो सबसे पुराने "सम्पूर्ण" हस्तलेखों (चौथी शताब्दी के) में इस प्रकार समापन क्यों नहीं किया गया। परन्तु यह सुझाव कि इस प्रकार का समापन खो गया है और इसलिए उसका पता नहीं चल सकता, हम में से कइयों के लिए व्यवहार्य विकल्प नहीं है। मेरा मानना है कि परमेश्वर अपने वचन की रक्षा का प्रबन्ध करता और इसे विनाश होने से बचाता है (देखें 1 पतरस 1:23-25)।

सम्भावना #3: कथित "शॉर्टर एंडिंग" मरकुस की पुस्तक का परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया समापन है। यदि आपकी बाइबल में इस प्रकार समापन नहीं है, तो NASB वाली मेरी प्रति में इसे इस प्रकार लिखा है:

> और उन्होंने [स्त्रियों ने] जल्दी से जाकर पतरस और उसके साथियों को ये सब बातें बताईं। और इसके बाद, यीशु ने स्वयं उनके द्वारा पूर्व से पश्चिम तक अनन्त उद्धार की पवित्र और अविनाशी बात पहुंचाई।

बाद के कुछ हस्तलेखों तथा संस्करणों में ऐसी ही समाप्ति की गई है, पर जैक लुइस ने ध्यान दिलाया है कि "शॉर्टर एंडिंग का समर्थन इतना घटिया है कि कोई विद्वान इस बात का समर्थन नहीं करेगा कि मरकुस ने पुस्तक का समापन ऐसा किया है।"[5] सी. माइलो कौनिक का मत था कि "अशिक्षित पाठक भी बता सकता है कि इसकी शैली तथा शब्दावली मूल मरकुस से नहीं ली गई थी।"[6] इस समाप्ति के बारे में हर बात को आयत 8 के साथ समाप्त होने वाली हस्तलिपि को उतारते समय किसी असंतुष्ट लेखक द्वारा जोड़ा गया अन्त मानते हैं।

सम्भावना #4: मरकुस 16:9-20 ही मरकुस की पुस्तक की मूल समाप्ति है। इस

प्रकार यह परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई है और ‘‘उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है’’ (2 तीमुथियुस 3:16)। मैंने मसीह के जीवन के अपने अध्ययन में अन्तिम पाठों तथा प्रवचनों में इन आयतों को शामिल करके पहले ही इस सम्भावना के लिए अपनी प्राथमिकता का संकेत दे दिया है।

इस विषय पर आपको अपना मन स्वयं बनाना पड़ेगा, जैसा कि पहले संकेत दिया गया है, मरकुस 16:9-20 में ऐसी कोई आवश्यक शिक्षा नहीं है, जो नये नियम में कहीं और न मिलती हो, इसलिए आपके लिए मेरी तरह करना अनावश्यक है। बहुत से रूढ़िवादी विद्वान इस प्रश्न को अनसुलझी पहेली मानकर छोड़ना पसन्द करते हैं।[7]

विचार करने के लिए ये कुछ विचार हैं। विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि कथित ‘‘लॉन्ग एंडिंग’’ (मरकुस 16:9-20) काफ़ी पुरानी है। जॉन एफ़. कार्टर ने लिखा है:

> ... विभिन्नताओं के साथ ही सही, ये पद कई अन्य हस्तलेखों में, जो दोनों की तरह ही [जिनमें यह नहीं है] और उन लोगों की भाषाओं में नये नियम के सबसे पुराने अनुवादों में जो यूनानी नहीं बोलते थे, मिलते हैं। इसका एक भाग लगभग 130-200 ई. में होने वाले इरेनियुस नामक एक मसीही लेखक द्वारा मरकुस का लिखा बताया गया था, जिसने नये नियम की ऊपर बताई गई सबसे पुरानी प्रतियों से लगभग 150 वर्ष पहले लिखा था।[8]

‘‘पुराने अनुवादों’’ के बारे में आर. सी. फोस्टर ने लिखा है:

> सबसे महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि संस्करणों का प्रमाण [अन्य भाषाओं में अनुवाद] व्यावहारिक रूप में इस पद के पक्ष में ही है। ... ये संस्करण कई यूनानी हस्तलेखों से बहुत पहले बनाए गए थे [,] जो उससे जो हमारे पास है, बहुत पुराना है, उपलब्ध थे।[9]

लॉन्ग एंडिंग, के विरुद्ध कई आपत्तियां की जा सकती हैं[10], परन्तु इनमें से एक भी निर्णायक नहीं है। उदाहरण के लिए एक आपत्ति है कि मरकुस 16:9-20 में मिलने वाले सत्रह शब्द हैं, जो पुस्तक में और कहीं नहीं मिलते। इस आपत्ति के सम्बन्ध में फोस्टर ने लिखा है:

> ब्रॉडस ने मरकुस की पहले की वे बारह आयतें लीं, जिन पर कभी संदेह नहीं किया गया और उन्हीं सत्रह शब्दों को ढूंढ़ा जो पुस्तक में और कहीं नहीं हैं। मैक्गर्वे ने लूका की अंतिम बारह आयतें लीं, जिन पर कोई सवाल नहीं उठता और उसने नौ शब्द ढूंढ़ लिए।[11]

मैं कार्टर के उद्धरण से यह अध्ययन समाप्त करता हूं:

मैं सब कठिनाइयों को समझता हूं ... , परन्तु क्योंकि प्रेरणा देने वाले पवित्र आत्मा ने

> नए नियम के इस्तेमाल के आरम्भ से इस सामग्री की अनुमति दी है, मुझे लगता है कि इसे परमेश्वर की प्रेरणा से मिला हुआ और प्रामाणिक मान लिया जाए, [चाहे मूल में यही अंत था], चाहे मरकुस ने अपने मूल कार्य में बाद में जोड़ा या प्रेरितों के युग में बाद में किसी और ने जोड़ा। ... निश्चय ही आत्मा अतिरिक्त लिखने की प्रेरणा वैसे ही दे सकता था। [यदि ऐसा हुआ], जैसे उसने पहले प्रेरणा दी थी।[12]

टिप्पणियां

[1] यह लेख उनके लिए उपयोगी है, जो सिखाते और प्रचार करते हैं। यह जानकारी किसी दूसरे को देने का तब तक कोई कारण दिखाई नहीं देता, जब तक कोई सवाल न करे। [2]यह जानकारी साधारण बाइबल क्लास में देने के लिए नहीं, बल्कि ऐसा प्रश्न उठने पर शिक्षक को तैयार करने के लिए दी गई है। [3]थॉमस ई. बूमरशाइन, ''मार्क 16:8 एण्ड द अपोस्टलिक कमीशन,'' *जरनल ऑफ़ बिब्लिकल लिटरेचर* 100 (जून 1981): 225–39. जैक पी. लूइस, ''द एंडिंग ऑफ़ मार्क,'' *हार्डिंग यूनिवर्सिटी लैक्चर्स* (1988), 600 में उद्धृत। [4]पवित्र आत्मा ने हमारे लिए मूल हस्तलिपियों (''हाथ से लिखी'' प्रतियों) को रखना उपयुक्त नहीं समझा। [5]लुईस, 598. [6]सी. माइलो कौनिक, *जीज़स, द मैन, द मिशन, एण्ड द मैसेज,* दूसरा संस्करण (एंगलवुड क्लिफस, न्यू जर्सी: प्रैंटिस–हाल, 1974), 405. [7]यह 1988 हार्डिंग यूनिवर्सिटी लैक्चरशिप (लुइस, 597–603) में दिए गए एक लैक्चर में जैक पी. लुइस का निष्कर्ष है। [8]जॉन फ्रैंकलिन कार्टर, *ए लेमैन 'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्राडमैन प्रैस, 1961), 347. [9]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1971), 1358. [10]इस तथ्य के अलावा कि दो सबसे पुराने सम्पूर्ण हस्तलिपियों में इसका समापन नहीं मिलता, कई महत्वपूर्ण प्रारम्भिक मसीही लेखकों को पता नहीं था। यदि, जैसा कि मुझे संदेह है, मूल समापन आरम्भिक एक या अधिक हस्तलिपियों से खो गया, तो इससे यह पता चल सकता है कि कुछ लेखकों को इसका पता क्यों नहीं था।

[11] फोस्टर, 1358. [12]कार्टर, 347. एक अज्ञात परन्तु परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखक के काम में जोड़ने के पुराने नियम के एक उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण का समापन देखें, जिसमें पुस्तक के मुख्य लेखक, मूसा की मृत्यु के बारे में बताया गया है (विशेषकर ध्यान दें 34:5, 6)। मूसा परमेश्वर की प्रेरणा से अपनी ही मृत्यु के विषय में लिख सका होगा, परन्तु यह अधिक सम्भावना है कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए किसी और लेखक (शायद यहोशू) ने अन्तिम पंक्तियां लिखीं।